के सम्मान से सुशोभित किया था। उन्हें महाराष्ट्र की प्रथम राज्य गायिका का भी सम्मान मिला था। सुर सिंगार संसद की ओर से उन्हें शारंगदेव फैलोशिप भी दिया गया था। केंद्रीय संगीत नाटक अकादेमी सम्मान और पद्मभूषण के अलंकरण से अलंकृत विदुषी केसर बाई केरकर का निधन 16 सितंबर, 1977 को हुआ था। विदुषी केसर बाई के लिये कहा जाता है कि उन्होंने किसी को भी गाना नहीं सिखाया, क्योंकि... वे अक्सर कहा करती थीं कि मैं अपना गाना अपने साथ लेकर जाऊंगी।

पं. भास्कर बुवा बखले की ख्याति महाराष्ट्र के संगीत प्रधान नाटकों में एक उत्तम अभिनेता और उत्तम गायक दोनों रूपों में रही है। उन्होंने संगीत की शिक्षा पं. विष्णु बुवा पिंगले, उ. मौला बख्श, उस्ताद बंदे अली खां, उ. फैज मोहम्मद खां, उ. नत्थन खां और उ. अल्लादिया खां जैसे वरिष्ठ गुरुओं से प्राप्त की थी। गायन और अभिनय दोनों ही क्षेत्रों में अपनी श्रेष्ठता साबित करने वाले मास्टर भास्कर बुवा बखले का निधन मात्र 53 वर्ष की उम्र में 18 अप्रैल, 1922 को पुणे में हुआ था। इनकी जन्म तिथि 17 अक्टूबर, 1869 है।

गोविंद राव टेम्बे बहुमुखी प्रतिभा संपन्न कलाकार थे। 5 जून, 1881 को कोल्हापुर में जन्मे गोविंद राव टेम्बे बचपन से ही पंडोवा तोड़कर, बच्चू भाई भंडारी और दत्तोबा हर्यालकर जैसे हारमोनियम वादकों से प्रभावित होकर, घरवालों से छुप-छुप कर स्वत: ही हारमोनियम का अभ्यास किया करते थे। बाद में उन्होंने मास्टर भास्कर बुवा बखले और उ. अल्लादिया खां से सीखा। उस समय हारमोनियम वादन की विकसित की कोई खास शैली नहीं थी, अत: उन्होंने हारमोनियम वादन की अपनी एक नवीन शैली विकसित की। एक ओर वे मराठी संगीत नाटकों में सक्रिय थे तो दूसरी ओर उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के मंचों पर भी।

गोविंद राव टेम्बे ने एक विलक्षण हारमोनियम वादक, कंठ सिद्ध गायक, नाट्यवेत्ता, अभिनेता, संगीत संरचनाकार और लेखक तथा वक्ता के रूप में अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय विभिन्न मंचों से दिया था। इनकी प्रतिष्ठा का आकलन इसी बात से किया जा सकता है कि नट सम्राट बाल गंधर्व इन्हें गुरुवर्य कहकर संबोधित करते थे। टेम्बे ने पुणे के वाद्य निर्माता आचरेकर जी के साथ मिलकर 1929 में एक विशेष गूंजयुक्त सुरीले हारमोनियम का निर्माण किया था जिसका नामकरण श्रुति संवादिनी किया था। वे हारमोनियम पर स्वतंत्र वादन करने वाले संभवत: पहले कलाकार थे। उन्होंने संगीत विषयक अनेक आलेख भी लिखे थे, और 'माझा संगीत व्यासंग' (मराठी), कल्पना संगीत (हिंदी) और 'गायन महर्षि अल्लादिया खां या चा चरित्र (मराठी) जैसी पुस्तकें भी लिखी थीं। राग और रस पर उन्होंने गहन चिंतन किया था। इसलिये विभिन्न शिक्षा संस्थानों में उन्हें व्याख्यान सह-प्रदर्शन के लिये आमंत्रित किया जाता था। गोविंद राव टेम्बे, खाडिलकर और बालगंधर्व की त्रिवेणी ने मराठी नाटकों में संगीत को उच्चतम स्थान पर स्थापित किया था। फिल्मों का चलन आरंभ होने पर कलाकार और निर्देशक के रूप में उसमें भी उन्होंने अपना योगदान दिया था। वे आकाशवाणी दिल्ली की सेंट्रल ऑडिशन बोर्ड कमेटी के सदस्य भी थे। दिल्ली में ही 20 सितम्बर, 1955 को हृदयाघात के कारण उनका आकस्मिक निधन हो गया। सन् 1956 में कोल्हापुर में उनके नाम पर एक मार्ग का नामकरण करते हुए उनकी एक कांस्य प्रतिमा भी स्थापित की गई थी। उनके कनिष्ठ पुत्र भाऊराव ने भी हारमोनियम वादन के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की।

मोगूबाई कुर्डीकर

जयपुर घराने की विशेषताएं

जयपुर घराने में सुर लगाव को विशेष महत्व दिया जाता है। विलम्बित लय में गमक युक्त आलापचारी करके राग को सुविचारित रूप में साकार करने के बाद एक ही सांस में कई आवर्तन की तानें कहने की प्रथा है। इससे स्पष्ट होता है कि आलाप और तान दोनों ही दृष्टि से यह घराना समृद्ध है। जयपुर-अतरौली घराने में खुले और जोरदार रूप में आवाज लगाने का प्रचलन है। इस गायन शैली में आवाज को छुपाने, दबाने या कृत्रिम बनाने को दोष माना जाता है। बंदिश की बढ़त के दौरान छोटी-छोटी तानों से बढ़त की जाती है।

धोंडूताई कुलकर्णी

16 जुलाई, 1904 को गोवा के कुर्डी ग्राम में जन्मी मोगूबाई कुर्डीकर ने अपने कला जीवन का शुभारंभ नाटकों में अभिनय से किया था। लेकिन संगीत के प्रति अनुराग का भाव बचपन से ही मन में था, अत: जहां भी अवसर मिला, जहां भी गुरु मिले, उनसे सीखती रहीं। उनके गुरुओं में कीर्तनकार हरिदास, बालकृष्ण पर्वतकर, चिंतोपंत दिनेकर (चिंतू बुवा गुरव), उ. बशीर अहमद खां और विलायत हुसैन खां (दोनों आगरा घराना) जैसे अनेक नाम शामिल हैं, किंतु कंठ संगीत की विधिवत् और वास्तविक शिक्षा उन्हें उ. अल्लादिया खां से ही मिली। उनके जीवन का पूर्वार्ध अत्यन्त कष्टमय और संघर्षमय रहा, लेकिन उन्होंने संगीत नहीं छोड़ा और अर्थोपार्जन के सुंदर माध्यम अभिनय को संगीत के लिये छोड़ दिया। सन् 1939 में पति के देहावसान के बाद मोगूबाई ने संगीत को आजीविका का साधन बनाया और 1940 से संगीत का कार्यक्रम देना आरंभ किया। तब इनकी बड़ी बेटी किशोरी अमोनकर 9 वर्ष की थीं। मोगूबाई को केंद्रीय संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार, पद्मभूषण का अलंकरण, तानसेन सम्मान सहित महाराष्ट्र सरकार और आकाशवाणी आदि द्वारा भी विशेष रूप से सम्मानित किया गया था। उनके शिष्यों में पुत्री किशोरी अमोनकार सहित वामनराव देशपांडे, सुशीलारानी पटेल, कौशल्या मंजेश्वर, कमल ताम्बे, सुहासिनी मुलगांवकर, सुलमा पिश्वीकर और पद्मा तलवलकर आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इस विदुषी गायिका का निधन 10 फरवरी, 1901 को हुआ।

मोगूबाई कुर्डीकर की यशस्वी सुपुत्री पद्माविभूषण गान सरस्वती विदुषी किशोरी अमोनकर भी अपनी मां की तरह विदुषी गायिका थी। किशोरी अमोनकर एक ओर जहां खयाल गायन के लिये